

DPN 6423

Title : भुवनेश्वरी कवच स्तोत्र BHUVANEŚVARĪ KAWACA
STOTRA

Run. No. 7148

Cat. No. 178 क

Micro. No.

Subject Hymn स्तोत्र

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.5 x 6.5

Folios 13

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor धन सिंह Dhana Singh

Date: NS / SS / VS / KS 870

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमो भुवनेश्वर्यै ॥ श्री पार्वत्युदाय ॥ देव देव महादेव सर्वेश्वर विद्महे ॥
कृपान खड्गगिधर चित्तमस्मानुलोपत ॥ १ ॥ P.T.O.

△ इति रुद्रयामले उमा महेश्वर संवादे श्री भुवनेश्वरी देव्याः सहस्र नाम
स्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभ ॥

संस्कृत ८७० भाषा शुभ ९ वर कुटुंबेयोमा, धनसिं नः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ दत्तदत्तसहादत्तसर्वभूत
विश्वनाथाय नमः ॥ यान्त्रिकविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ॥ याज्ञिकविद्यायां
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ दत्तदत्तसहादत्तसर्वभूत
विश्वनाथाय नमः ॥ यान्त्रिकविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ॥ याज्ञिकविद्यायां
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१७८३ २२२ भुवनेश्वरी चण्डिका स्तोत्र

वैष्णवेषु लभ्यते ॥ ३ ॥ यस्याः स्मृतं न मार्तुं न सर्वं याये ॥ ४ ॥ स चाना
 राधनं रवेरुत्था जीवन्मुक्तो न संशयः ॥ ५ ॥ तस्या नाम सरुमा निव
 द्वासि य समासः ॥ ६ ॥ अस्याः पुत्रवने श्वरी सरुमा नाम समासः ॥ ७ ॥ दक्षि
 ना म्नाय शिवः ॥ ८ ॥ विष्णुः ॥ ९ ॥ अस्याः पुत्रवने श्वरी दक्षिणा म्नाय शिवः ॥ १० ॥
 सिद्धये विनियोगः ॥ ११ ॥ आद्या मया यत्रा गच्छि ॥ १२ ॥ आद्या मया यत्रा गच्छि ॥ १३ ॥

वनध्वत्री रुवना रुवना रुथा रुवानी रुव लविनी ॥ ७ ॥ ब्रुदाभी ब्रुद रुकाव
तथा ब्रुद प्रियासगी ॥ ३ ॥ माकात्यायनी दुर्मी मर्मी ला सर्व मर्मी ला ॥ १ ॥ प्रिय
राय नमः शनी सूचरी सूचरी सूच प्रिया ॥ ३ ॥ मन्त्री नामनी नाम नामका
र्थकरी शु ॥ ४ ॥ वाक्त्री नामायनी वक्षु वासु वक्षु नायिका ॥ मादुवनी
वक्षु मात्री वाक्त्री वाय वाङ्मानी ॥ २ ॥ महा माया मुक्क कक्षी महा प्रिय

15

10

मवगातथाभाहमहासुनी। गोत्रीगोत्राजिनीगोत्रागोत्रवर्धुजयय
 दा॥१८॥ उग्राउग्रयुदाभाभाहनिदाभाहनिदायिनी। उग्रगोत्रायाउ
 ग्रानीलोथेकजठरथा॥१९॥ हनत्रुयातथावसिद्धिकालिका। गानानी
 लावनागीशीतर्थनीलसनसुनी॥२०॥ गंगकाशीसतिसया। सर्वकि ३
 र्थमहाहयागीर्थत्रुयातिर्थदावयुन्थागीर्थविजयिनी॥२१॥ युन्थ

5

दायुन्थत्रुयावयुन्थकलुयुनातनी। युन्थकलायुन्थसंस्कारथायुन्थ
 जनयिया॥२२॥ तुलनीनीउनागलाताधिकात्रयित्रयिया। सनीसया
 सयलमात्रुद्रीनीकयुवज्ञला॥२३॥ दवकीककुमागावसूरुडाकड
 त्रुयिना। मनाहत्रातथासोसाश्वसांगीसमदजिनी॥२४॥ धात्रुयाधात्र
 नजाधात्रावयियदर्शना। कमात्रीकालिकाकदाकमात्रीत्रुयाशानिनी

॥२५॥ युव ल्या युव लीत्र या युव वित्र सर्व जि ना यी नृ सु नी शु दु म अ यो
 या वृ द्वा ज ना तु नो ॥२६॥ अ गि द्वा स्को नृ नृ या ना वृ सी च अ ला च ना ॥२७॥
 सु मा ना व द नृ या व द का र्य क नी शु र ॥२८॥ व द म ना दि ति द का स वृ मा
 ता स ना र नी या न रि या या मि नी च या मि ना या ल न रि या ॥२९॥ मा सा ४
 मि नी मा स रु का मा सा ५ न व ल ला न य स्त्रि नी र यी र या त य ४ मि

द्वि य दा रि नी ॥३०॥ रु वि का भी रु वि द्वा का रु य क या नृ मा दि नी म ख ला त्मा रु
 ष ट्का ना य ल य रु तु ज रि या ॥३१॥ द का दा दा रि नी ॥३२॥ रु मी रु मी रु मी रु मी
 द रु य रु वि ना मि नी या वृ ति य वृ त यी ना त था य वृ त वा मि नी ॥३३॥ रु मी रु मा
 रु म नृ या मी ल्या मा ल्या म ना त मा के ला स वा मि नी मू का गि व का उ वि ला मि नी
 ॥३४॥ वा वृ मी या नृ नृ या या था नृ का ल न ना ॥३५॥ य ल कृ तु त र्ग ज व य ल

कुलप्रविनी ॥ ॥ महासिंहाय त्रिस्तुतं महत्तमं त्रिस्तुतं ॥ ३३ ॥ दमा
 र्जनादमहया सूर्यकाटिसमयुता ॥ ॥ बालादित्यसमाकाशसिंदूरं
 स्त्रितविग्रहा ॥ ३४ ॥ उवायावकयूयाचत्रक वचनत्रयधर ॥ ॥ का
 टत्रिकाटत्रा कीयनिर्झरुता तदिगमया ॥ ३५ ॥ यत्नावालमोनायशू
 न्यालयनिवासिनी ॥ ॥ भग्ननवासिनी शून्याशून्या येवसूवासिनी ॥ ३६ ॥

मधुकैटरुहृत्तमदिषासूत्रयाहिनी ॥ ॥ निष्ठुसुमयनीचतुसूत्र
 विनासीनी ॥ ३७ ॥ निवस्त्रनिवत्रुयिनी ॥ ३८ ॥ पायनिवद्रुमिनिवद्रु
 याजितादाजिववकस्तुनिवानीनिवद्रुयिनी ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं नी ॐ ह्रीं क
 यायत्राऊकमासूत्रयिया ॥ ॥ लङ्कागालासाधुलालाकूलमुकुल
 युक्तिगा ॥ ४० ॥ महाकुलीनानिक्कासूरुयिताहवत्तनिगाकुली

कृतय कृत्यायन थाय कृतय विना ॥ ४० ॥ अनन्ताननय नाय अनन्त
 सूत्र नागिनी सदसुशा ययिना डिता विदान दयुदायिनी ॥ ४१ ॥ दस
 किजिवसं गनयं डिता रुयदा यिनी ॥ नागं गी नागरु याचनाग ॥
 हाय विषात्रिनी ॥ ४२ ॥ यत्रिनी यत्रिनी सिद्धा महा सिद्धियुदा
 यिनी ॥ दगयु नायिना ययम नायैव तिलो रुमा ॥ ४३ ॥ तिला रुमा

नखरयाय उर्वशा यमनी यिया गुशरु सुगता गुशरु य्यालीर
 नत्रयिनी ॥ ४४ ॥ जकिनी यकिनी चवनाका ॥ सिजामत्रीन था
 ॥ दगयुना यिना वावयकिनी नदायिवा ॥ ४५ ॥ यत्रि ४कि
 कि ४सु तिमि ४य य्रि युवि सुमाडया ॥ शाकेत्री यम सुवीमन
 यत्रि ४यिनि ४सनाकिं मा ॥ ४६ ॥ अर्नग मदनद वि अर्नग

मदनाहुया। सुवनद श्रीमहा मायात आमु तनयालिनी॥४१॥ॐ
श्वरीॐ श्वनसीगचड। लषनहृषिणा। विमानदाकनीनदा
विनासंसाजनस्यवा॥४२॥ अनुयासर्वतूयावतु कृतूयाविदा
मिका। अनचतूयिनिरागथानन्दयुदायिनी॥४३॥ सदानदा
सदानिरासाधकानन्ददायिनी। त्रिगुणैर्माहृष्याणवि

काचविराविनी॥४०॥ चतुसूर्यसदृकदीकासूर्यवत्यनियानि
का। नात्रसिंदीहृयग्रीवादिनेत्याकृतिनामिनी॥४१॥ वैशुवी
विशुकरकाचलग्नमनिवासिनी। त्वदुर्वुजाज्जुतुजासदृस
तुजसंस्मिता॥४२॥ आद्याकात्यायनीनिरासर्वज्ञसर्वदायि
का। सर्वमनुमयीदवीसर्वधैर्यविनामिनी॥४३॥ सर्वधवस

यीदवि सर्वलोकमयी यत्रा॥ सर्वसंभारिनी देवी सर्वलोकव
 र्णकनी॥ ७४॥ त्रैलोक्यं त्रिजगतामादृत्या वसुधैव कुटुम्बकम्
 टीनर्त्तु जया धूर्त्तार्त्तु धूर्त्तजनयिया॥ ७५॥ महा मायाम
 हा मय्यमहा सत्त्वविभाहिना वलियुयामा सत्त्वविश्रम्भका
 सयियामदा॥ ७६॥ मय्यमका माधुरी कामधमाधववत्सली
 यि

दिवामयी नागि मयी संक्ख संक्ख सत्त्वयिनी॥ ७७॥ कान्तया भोक्तृया
 भोक्तृनी भोक्तृदायीनी॥ सुसुम्ना तृयाय सुस्त्रिनी वागि सुस्त्रिनी॥ ७८॥
 मिथितृया तत्त्वतृया तत्त्ववत्तृयिनी॥ सर्वरूपमयी देवी रयचरुत नि
 ॥ ७९॥ गुरुनागि सत्त्वयाय तृदा मय्यमका माधुरी कामधमाधववत्सली
 तय ४ सिद्धियुदायिनी॥ ८०॥ अत्र नृपतिवत्तमयणी सावित्री सत्यवादि

15

10

5

नी। काया शुभ्रमुभादन नानालंकात्रवासिनी॥५१॥ शतकृत्तु
त्रयायमवैचकुनिवासिनी। शुभाकाशशुभत्रयाशुभसंस्कार
रिका॥५२॥ आकाशगमिनीदवी आतिशयकुनिवासिनी। विनासंका
विनत्रयाविनासिदीयदायीनी॥५३॥ अत्रयायस्वत्रयायविश्वत्र
यायत्रयिनी। त्रयाजीवागधवैश्याद्यावैजकाविनी॥५४॥ नानाव

शय्यादवी नानावैश्यायसंलिना। कृत्रयाकृत्तिगाकृत्तुत्रयाय
कालिका॥५५॥ लक्ष्मीयुदामहालक्ष्मीशसर्वलक्षणसंयुगाय
यलगुरुसंस्कारधनत्रयायधनयुदा॥५६॥ नानात्रयुदादवीन
त्रयंजयसंलिना। वल्लभस्यावर्तुत्रयायसर्ववर्तुमयीतथा॥५७॥ स
होत्रत्रयिनी आद्या आदिखाद्यागन्धयिनी। सहोत्रमाचिनीदवीसं

ॐ मङ्गलदायीनी ॥ ७८ ॥ जयत्रयाञ्जयाचजयिनीजयनाशिनी। मा
न्यामानयिया मन्त्रा मानिनामानदायिका ॥ ७९ ॥ साधिकासाधका
साधिकासाधनयियास्त्रावराजंगमसा ॥ ८० ॥ यदनाचयल
यिया ॥ ८० ॥ षड्विदाष्टद्वित्रयाचसिद्धिदासिद्धिदायिनी। कुङ्कुम
गलसंयुक्तसंकाशागनिशिमयी ॥ ८१ ॥ यद्ययत्नययाह

कृपादद्यानामसहस्रकं। तस्यदहुरुसंस्तानं कुरुतुवर्तेश्वरी ॥
८२ ॥ तस्यकार्यरुवेदवी नन्यथचकदायना। मन्त्रानेयानन्यथायि
ष्टन्यागमनययावर्तनी ॥ ८३ ॥ चतुर्थयत्निकर्त्तिगजलमन्त्रसंयुक्त
मन्त्रयत्नस्यसंयुक्त ॥ ८४ ॥ जयामनुसहस्रसुखय ० नामसहस्रमुक्तं
तस्यकुङ्कुमरुवेदविमर्षदातुवर्तेश्वरी ॥ ८५ ॥ धूपदीयादिरिति ॥

ववलिदानादिके सुथा। उके नाना विवेक येने वये कुवन ग्यत्री॥
 १५॥ संयुक्त विधि वरुयाय ० नाम सरुमुके। अ विना सिद्धि माया
 किमा वका नाकी उ संनये॥ ११॥ वरु यणु स मा लिख कुं क मा न क
 व द ने ४ त था। ग म ग्रा य ना र व वि लिख ता ध का रु म॥ १६॥ सु कि (थो ११
 गुरु न द गं लिखी ता द कि (ल तु ऊ। धा न य त न या रु क्का द वी नू

य ल या र्व कि॥ १२॥ त स्य सिद्धि म् दे ग्गानि अ वि ना र्व रु वि ष्य कि। त
 ल ग्रा ऊ कु ले यु न स र्व उ वि ऊ यी रु व ॥ १७॥ द व ता व ली मा या
 कि स यु न मी ने सा दे य ४ य १० द्वा धा न य द्वा वि द वी वृ द्वा य या र्व
 कि॥ १८॥ ॐ रु यु का य ना ला रु न वृ ता क ल्या ल वि स्र ना ना अ न
 द द्या ग ल ले अ सा ध का म् कि मा यु या ॥ १९॥ सं या या कि व द

ॐ श्री सुवन श्रय नमः ॥ श्री यावत्तु वाच ॥ वद स्र कयंद व सर्व
मनु मयं गुरुं । सर्व लका कनं नृणां मेथा ली कुरु ल युदं ॥ १ ॥
महोद व उ वाच ॥ कवय सुवन श्रय ॥ १ ॥ सुद विप्र यत्न ॥ १ ॥
स्या ना धन मार्तु हर्तु ला क व ग मा यत्न ॥ २ ॥ सर्व ग ल का क क
वय मां यां द न स म सु कौ गु क्तु क्तु क्तु न र लो क न यु का धी क द
या वा ०

१३